:: मौर्य ::

मौर्य कला, विज्ञान व साहित्य

मौर्य कला →

→ पहली बार पत्थर का प्रयोग

→ फारस का प्रभाव
- पॉलिश
- खरोष्ठी लिपि
- घंटक
- आदेश शैली
- पशु आकृति

(मौर्य शैली मौलिक नही है इस पर फारस का प्रभाव है।

→ सौद्देश्यपूर्ण है (कला का उद्देश्य है) → बौद्ध प्रचार के लिए

→ मूर्तिकला →

→ पाषाण प्रतिमाएँ

→ यक्ष की मूर्तियाँ →

(1) मणिभद्र यक्ष प्रतिमा — परखम गाँव (मथुरा)
(2) चमर ग्राहिणी यक्षी — दीदारगंज (पटना)
(3) त्रिमुखी यक्ष — राजघाट (वाराणसी)
(4) नर्तकी की मृणमूर्ति } बुलंदी बाग (पटना)
(5) रथ का पहिया } बुलंदी बाग (पटना)
(6) पाषाण निर्मित हस्ति प्रतिमाएँ →
- (धौ) – धौली (उड़ीसा)
- (का) – कालसी (देहरादून)

→ महल →

(1) सुगांग →
- लकड़ी का महल
- कुम्रहार गाँव (पटना)
- चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा निर्मित।
- फाह्यान ने इसे देवताओं द्वारा निर्मित बताया।

HC Choudhary Mobile Apps

Scanned by CamScanner

2

- मेगस्थनीज , स्ट्राबो , एरियन ने इसे 'सूसा' व 'एकबतना' के महल से श्रेष्ठ बताया है।

- खोज → स्पूनर ने

(2) लकड़ी का परकोटा →
- बुलंदी बाग (पटना)
- खोज – स्पूनर ने

⇒ अशोक के स्तम्भ →
→ उद्देश्य → प्रेम, सहिष्णुता, दया, जनकल्याण का संदेश देना।

→ अशोक के स्तम्भ एकाश्मक है।

→ ये मौर्य कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने है।

→ ये कांतिमय (चमक) पॉलिशदार है।

→ ये पृथक संरचनाए है।

→ ये किसी स्थापत्य का भाग नही है।

→ ये हल्के गुलाबी बलुआ पत्थरो से निर्मित है।

→ इनके पत्थर चुनार (वाराणसी) से लाए गए।

→ अशोक के स्तम्भो के भाग →

(1) तना →
- पॉलिशदार है।
- शुंडाकार शाफ्ट जैसा है।

(2) अवांगमुखी कमल (उल्टा कमल) →
- घंटक जैसा है।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

(3) गोल पत्थर की चौकी →
- 04 चक्र (24 तीलियाँ)
- 04 पशु
  - (H) – Horse (घोड़ा)
  - (O) – Ox (बैल)
  - (L) – Lion (शेर)
  - (E) – Elephant (हाथी)

(4) पशु मूर्ति →
- 04 शेर
  - सारनाथ
  - सांची
- 01 हाथी → सँकिसा
- 01 शेर
  - बसाढ़
  - लौरिया नंदनगढ़
  - रामपुरवा I
- 01 साँड → रामपुरवा II

(5) धर्म चक्र → 32 तीलियाँ

→ अशोक के सारनाथ स्तम्भ का शीर्ष भाग भारत के राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में 26 जनवरी 1950 को अपनाया गया।

→ राष्ट्रीय चिन्ह में 'सत्यमेव जयते' शब्द 'मुंडकोपनिषद' से लिया गया।

→ प्रतीक →

(1) हाथी → बुद्ध का अपनी माता के गर्भ में आना

(2) कमल व साँड → बुद्ध के जन्म का

(3) घोड़ा → महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग)

(4) सिंह → बुद्ध के शाक्य सिंह होने का।

(5) चक्र
- बुद्ध के प्रवचन
- निरन्तर प्रगति

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ गुफाएँ →

→ पॉलिशदार गुफाएँ

→ आजीवकों व निर्ग्रंथों के लिए बनाई गई।

→ निर्माता → अशोक
→ अशोक का पौत्र दशरथ

(1) अशोक निर्मित गुफाएँ →
- बराबर (गया) में
- 04 गुफाएँ बनाई
  - सुदामा
  - कर्ण-चौपाड़
  - लोमहर्ष
  - विश्व झोपड़ी

(2) दशरथ निर्मित गुफाएँ →
- नागार्जुनी पहाड़ी में
- 03 गुफाएँ बनाई
  - गोपिका
  - वदथिक
  - वहियक

→ इन 07 गुफाओं को 'सप्त घर' कहा जाता है।

→ स्तूप →

→ स्तूप ऋग्वेदिक शब्द 'थूह' से बना है जिसका अर्थ 'राख की ढेरी' है।

→ अस्थि अवशेषों पर बनी अर्द्ध गुम्बदाकार समाधियाँ हैं।

→ अशोक ने 84,000 बौद्ध स्तूपों का निर्माण करवाया।

→ सांची तथा भरहूत के स्तूपों का प्रारम्भिक निर्माण अशोक ने करवाया था। इनका विस्तार 'शुंग' राजाओं द्वारा किया गया।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

(1) सांची का स्तूप →
- सबसे प्रमुख स्तूप।
- यह स्तूप ईंटो से निर्मित है।
- खोज → अलेक्जेंडर कनिंघम (कनिंघम को भारतीय पुरातत्व का जनक कहते हैं)
- सांची मे 03 स्तूप मिले है जिनमे से एक मौर्य काल का तथा दो मौर्योत्तर काल के हैं।
- मौर्यकालीन स्तूप में रेलिंग नही है जबकि मौर्योत्तर काल के स्तूपो में रेलिंग है।
- स्थित → विदिशा (मध्यप्रदेश)

(2) भरहूत का स्तूप →
- स्थित → सतना (मध्यप्रदेश)
- निर्माण → अशोक के समय
  विकास → शुंग काल में
- पॉलिशदार लाल पत्थरो से निर्मित
- भरहूत की डिजाइनदार रेलिंग पर यक्ष, लक्ष्मी, मोर, हाथी आदि की मूर्तियाँ बनी हुई है।

→ सिक्के →
→ सिक्को का अध्ययन → 'न्यूमिसमेटिक्स'
→ प्राचीनतम सिक्के → आहत/पंचमार्क (इन पर कोई लेख नही होता; इन पर निशान बने होते है।)
→ मौर्य सिक्को पर वेदिकाएँ तथा वृक्ष बने होते थे।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

Page No.: Date:

→ सिक्को के नाम
- पण
- काषपिण
- निष्क *✓
- मश्क

*✓→ निष्क प्रारम्भ स्वर्ण आभूषण था बाद में सोने के सिक्के को निष्क कहा जाने लगा।

→ अशोक →

→ अशोक ने शिलालेख, स्तम्भलेख तथा गुहालेख अंकित कराए।

→ अशोक के 14 शिलालेख तथा 07 स्तम्भलेख मिले हैं।

→ शिलालेखो का अध्ययन → 'एपिग्राफी'

→ शिलालेखो की भाषा → प्राकृत

→ शिलालेखो की लिपि
- → ब्राह्मी लिपि → भारत
- → खरोष्ठी → शाहबाजगढी, मांनसेहरा → पाकिस्तान
- → अरमाइक → अफगानिस्तान

→ अशोक के द्विभाषी (ग्रीक व अरमाइक) आभिलेख 'शार-ए-कुना' (कंधार, अफगानिस्तान) से मिले हैं।

→ अरमाइक आभिलेख 'लघमन' (अफगानिस्तान) से मिला है।

→ शिलालेखो पर जानकारी →

(1) पशुबलि निषेध

(2) सीमांत राज्यो तथा एंटियोकस (सीरिया का राजा) की जानकारी

(3) प्रति पांचवे वर्ष दौरे का आदेश

(4) भेरी (युद्घोष) घोष के स्थान पर धम्म (धर्म) घोष

(युद्ध के स्थान पर, धर्म का आह्वान करो)

(धर्म के माध्यम से जीतो, युद्ध के माध्यम से नहीं)

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

(5) धम्म महामात्रो की नियुक्ति
(6) प्रतिवेदको को आदेश → जनहित के कार्यों की सूचना तुरन्त देने।
(7) धम्म श्रावण का संदेश
(8) धम्म यात्रा
(9) सारहीन मंगल के स्थान पर धम्म मंगल
(10) धम्म की श्रेष्ठता
(11) धम्म दान
(12) धार्मिक सहिष्णुता
(13) कलिंग विजय, सीमान्त राज्यो का वर्णन, विदेशो मे धर्म प्रचारक की जानकारी
(14) ये शिलालेख इसलिए खुदवाए गए है ताकि लोग धम्म का पालन करे।

→ अशोक के शिलालेख 08 स्थानो से मिले हैं —
(1) शाहबाजगढी
(2) मानसेहरा > (पाकिस्तान)
(3) धौली
(4) जौगढ > (उड़ीसा)
(5) कालसी (देहरादून)
(6) गिरनार (गुजरात)
(7) सौपारा (महाराष्ट्र)
(8) एर्रागुडी (आंध्रप्रदेश)

→ अशोक के शिलालेखो की खोज → पादरे टी फैन्थेलर (1750)

→ सर्वप्रथम पढा → जेम्स प्रिंसेप (1837)
(जेम्स प्रिंसेप 1st इतिहासकार जिसने ब्राह्मी लिपि पढी थी।)

→ प्रमुख अभिलेख →
(1) प्रथम पृथक कलिंग अभिलेख →
– इसमे लिखा है, "समस्त प्रजा मेरी संतान है।"

(2) भाब्रू शिलालेख →
– बैराठ (जयपुर) मे बीजक पहाड़ी में

Scanned by CamScanner

Page No.:
Date:

- कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया।
- जानकारी –
  - → अशोक के बौद्ध होने का एकलौता शिलालेखीय प्रमाण है।
  - → अशोक ने बौद्ध त्रिरत्नो मे आस्था व्यक्त की है। वे
    - त्रिरत्न
      - बुद्ध
      - धम्म
      - संघ
  - → 07 बौद्ध पुस्तको का वर्णन किया है।
  - → अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट कहा है।

(3) अशोक के नाम वाले शिलालेख →

- (M) - मास्की शिलालेख
- (U) - उदयगोलम शिलालेख
- (N) - निट्टूर शिलालेख
- (G) - गुर्जरा शिलालेख

- अन्य शिलालेखो में उपाधियाँ (के नाम मिलते है) →
  - → देवनांप्रिय
  - → प्रियदर्सि

(4) रानी का स्तम्भलेख →
- कौशाम्बी (UP)
- अशोक की रानी → कारुवाकी
  अशोक का पुत्र → तीवर } (का वर्णन/उल्लेख)
- इसी पर 'हरिषेण' ने समुद्रगुप्त की 'प्रयाग प्रशस्ति' लिखी।
- अकबर ने इसे कौशाम्बी से इलाहबाद मे लगवाया।
- इसी पर जहाँगीर का भी लेख है।

MC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner